Fourteenth Loksabha

Session : 7
Date : 22-05-2006
Participants : Satpathy Shri Tathagata,Rana Shri Kashi Ram,Gowda Dr. (Smt.) Tejasvini,Reddy Shri Suravaram Sudhakar,Vaghela Shri Shanker Sinh

an>

Title : Discussion on the motion for consideration of National Institute of Fashion Technology Bill, 2006 as passed by Rajya Sabha (Bill passed).

THE MINISTER OF TEXTILES (SHRI SHANKARSINH VAGHELA): Sir, I beg to move:

> "That the Bill to establish and incorporate the National Institute of Fashion Technology for the promotion and development of education and research in fashion technology and for matters connected therewith and incidental thereto, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

> "That the Bill to establish and incorporate the National Institute of Fashion Technology for the promotion and development of education and research in fashion technology and for matters connected therewith and incidental thereto, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration."

श्री काशीराम राणा (सूरत) : सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी ने यह जो बिल सदन में रखा है, मैं दो-तीन सुझावों के साथ उसका समर्थन करूंगा। मुझे हर्ा और खुशी है कि एनडीए के समय में जिस बिल का प्रारूप तैयार किया गया था, आज वही बिल के रूप में इस सदन में पेश हुआ है।...(व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री प्रियरंजन दासमुंशी) : महोदय, माननीय सदस्य और मंत्री जी दोनों ही गुजरात से हैं, दोनों ही अच्छे दोस्त हैं और दोनों ही इतने सिम्पल हैं कि दोनों का फैशन से कोई ताल्लुक नहीं है।

श्री काशीराम राणा : महोदय, मुझे लगता है कि यह बिल आज की युवा पीढ़ी, जो यह चाहती है कि डिजायनर बने, देश और दुनिया में कुछ नाम कमाए, उसका हौसला बढ़ाने वाला है। मैं जानता हूँ कि आज जो युवा हैं, उस युवा पीढ़ी में नेशनल इंस्टीट्युट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी के कोर्सेज का क्रेज है। जो बच्चे अच्छे अंकों से अपना कोर्स पूरा करते हैं वे इस कोर्स के आधार पर अपना जीवन, अपना भविय बहुत अच्छा, ब्राइट बना सकते हैं। आज जब मंत्री जी यह कहते हैं कि हमारा एक्सपोर्ट बढ़ रहा है, यह बात अलग है कि गारमेंट का एक्सपोर्ट नहीं बढ़ रहा है बल्कि उसमें निगेटिव ग्रोथ है, लेकिन फिर भी कॉटन में एक्सपोर्ट बढ़ रहा है, तो उसकी वजह यह है कि यहां पर अच्छे डिजायनर, जो फैशन में अच्छी डिजाइन बना सकते हैं, वे लोग इसी एनआईएफटी की पैदाइश हैं। उन्होंने अपनी आर्ट, क्रिएटिविटी और इमेजिनेशन के जरिए देश और दुनिया में नाम कमाया है और इसीलिए हमारा एक्सपोर्ट बढ़ रहा है। इसके साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि हमारे गारमेंट एक्सपोर्ट को वर्ा 2010 तक 50 बिलियन डालर तक बढ़ाने का टारगेट है। इस टारगेट को प्राप्त करने के लिए, हमारे देश को अच्छे यंग डिजायनर्स चाहिए। इस बिल से हम, एनआईएफटी में जो डिप्लोमा कोर्सेज चल रहे हैं, उनको डिग्री कोर्स बना सकते हैं। एक नया इंस्टीट्यूट है, वह कारपोरेट बॉडी बनेगा, निगम बनेगा। इससे इस कोर्स में जाने वाले जो स्टूडेंट्स हैं, उनमें एक नया कॉंफिडेंस पैदा होगा। आज पूरे विश्व में फैशन का युग है और वह आगे ही आगे बढ़ रहा है। इस बिल में जो प्रावधान किया गया है, उससे मुझे पूरा विश्वास है कि इससे अच्छे फैशन डिजाइनर हमारे देश को मिलेंगे, जो हमारा निर्यात के 50 बिलियन डालर्स के लक्ष्य को एचीव कर सकेंगे, बल्कि उसके साथ ही साथ वे भारत का नाम दुनिया में रौशन करेंगे। इसलिए मैं इस बिल का समर्थन करता हूं।

जैसा मैंने कहा कि इस बिल का इनीशिएटिव एनडीए सरकार के समय लिया गया था। जिस प्रकार से वस्त्र मंत्रालय के बारे में एनडीए सरकार की योजना थी, थोड़े-बहुत फर्क के साथ वह आज भी है। यह जो एनआईएफटी का एक्ट बनेगा, यह उसी सिलसिले का एक पार्ट है। मुझे लगता है इसको अच्छी तरह से मंत्री जी इम्प्लीमेंट करेंगे और जो हम चाहते हैं वह हम हासिल कर पाएंगे।

इस बिल में कारपोरेट बॉडी के स्वरूप के बारे में उल्लेख है। मैं मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि कहीं ऐसा न हो कि नौकरशाही इसमें पूरी की पूरी हावी हो जाए। इस निगम का चेयरपर्सन एकेडमिशियन हो और बाकी जो सीटें भरनी हैं, चाहे तीन हों या पांच हों, लोक सभा के दो सांसद हों या राज्य सभा से एक सांसद हो, इसमें यह प्रावधान रखा गया है कि जो भी डिजाइन मेकर होगा, वह एकेडमिशियन होगा, ब्यूरोक्रेट होगा। सरकार को एक सावधानी यह रखनी चाहिए कि कहीं नौकरशाह प्रभावी न बन जाएं। नहीं तो बहुत सारे सवाल खड़े होंगे और सरकार की या मंत्री जी की उतनी रिस्पेक्ट नहीं रहेगी। मैं चाहता हूं कि सरकार इस सम्बन्ध में सावधानी से आगे बढ़े।

सभापति जी, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि यंग जेनरेशन में जितना फैशन को लेकर क्रेज है, उसे देखते हुए हमारे जितने भी कैम्पस हैं, चाहे कोलकाता में हो, बंगलौर में हो, हैदराबाद में हो, चेन्नई में हो या दिल्ली में हो या गांधीनगर में हो, उनका विस्तार होना चाहिए। वहीं का वहीं कैम्पस रखेंगे तो मुझे इस बात का अनुभव है कि हमारे जो स्टूडेंट्स हैं, चाहे उनमें कितनी भी योग्यता हो, अच्छी परफारमेंस हो, उन्हें एनआईएफटी में प्रवेश नहीं मिलता है, क्योंकि अभी तक वही सात कैम्पस हैं। इसलिए इनकी संख्या को बढ़ाना होगा। क्यों नहीं भोपाल में, जयपुर में, श्रीनगर में या नोएडा में इनके कैम्पस हों, क्योंकि यह ऐसा कोर्स है जिसमें सेलेक्टेड एरिया के ही लोग आएं, यह नहीं होना चाहिए। जो भी योग्य विद्यार्थी हो, इस कोर्स में प्रवेश लेना चाहता हो, उसे प्रवेश मिलना चाहिए और सभी सहूलियतें मिलनी चाहिए। इसलिए मेरा मंत्री जी से अनुरोध है कि इन सात कैम्पस को बढ़ाकर कम से दोगुना करना चाहिए। जैसा उन्होंने इस बिल में फंड का प्रावधान किया है, उसके लिए अगर फंड की जरूरत पड़े, तो सरकार को उपलब्ध कराना चाहिए, क्योंकि हम 50 बिलियन डालर्स का एक्सपोर्ट का लक्ष्य पूरा करना चाहते हैं।

जो हमारी यंग जेनरेशन है, इस कोर्स में प्रवेश लेती है, तो हमें उन्हें मौका देकर उनकी केपेबिलिटी को दुनिया के सामने रखना चाहिए। आज के युग में फैशन और डिजाइनिंग का काम इतना बढ़ गया है कि सिर्फ पैरिस की टेक्नोलॉजी का इस क्षेत्र में विश्व में नाम हो रहा है कि वहां की फैशन टेक्नोलॉजी सबसे अच्छी है। महोदय, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि भारत के ही डिजाइनर हैंजो इनसे भी अच्छे डिजाइन और फैशन के काम में कैपेबल हैं, उन्हें और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। उन्हें आगे बढ़ने के लिए भारत सरकार की ओर से सहयोग मिलना चाहिए। मेरा सुझाव है कि अभी का जो कैम्पस है, यह ठीक है, एनडीए की सरकार ने आज के कैम्पस को इतना लेटेस्ट बनाया, अद्यतन बनाया, जिससे फैशन और डिजाइन कोर्सिस का नाम रोशन हो सके। इस बारे में आप सोचें।

जो डिग्री कोर्सिस हैं, उनमें शायद हम बहुत आगे नहीं बढ़ सके हैं, लेकिन हमने सूरत में एक सर्टीफिकेट कोर्स की चार-पांच साल पहले शुरूआत की थी। ऐसे सर्टीफिकेट कोर्सिस चलाए जाएं। इस बिल में कहा गया है कि सर्टीफिकेट कोर्सिस भी करेंगे और नए कोर्सिस भी जोड़ेंगे। कई ऐसे स्थान हैं, जहां यह सर्टीफिकेट कोर्स शुरू करके वहां के युवाओं को इस कोर्स में ला सकते हैं। अगर हमारी युवा पीढ़ी के लिए अगर ऐसा स्कोप हो जाए तो आज जितने डिजाइनर और फैशनकारों की आवश्यकता है देश और दुनिया में हमारे युवाओं का नाम रोशन हो सकता है। आज जैसे दुनिया में हम चाइना के साथ कपड़ा मार्केट में कम्पीटिशन में है, फिर भी अमरीका और यूएई वाले उपभोक्ता भारत के कपड़े पसंद करते हैं, क्योंकि चाइना के मुकाबले में हमारे फैशन डिजाइनर अच्छी क्वालिटी और अच्छा डिजाइन बनाते हैं और हमें चाइना के कम्पीटिशन में वर्ल्ड मार्केट में रहना है तो वर्ल्ड मार्केट में रहते हुए अगर हमें सफल होना है तो हमें चाहिए कि जो आज शिक्षा का स्तर जिस प्रकार का है उसे और ऊंचा उठाना जरूरी है। इस बिल में एक बदलाव करने की जरूरत है और अगर हम इस बदलाव को करेंगे तो एक अच्छा परिणाम लाने की ताकत इस बिल में है।

सभापति महोदय, इसके साथ मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि इस बिल के सैक्शन 24 में लिखा है और उसमें एक प्रावधान रखा गया है कि "Subject to the provisions of this Act, the Statutes may provide for all or any of the following matters: " जिसमें कहा गया है कि उसमें आरक्षण की व्यवस्था होगी। सैक्शन 24 की जो सब क्लाज़-बी है, उसमें लिखा है कि "the reservation of posts for the Scheduled Castes, the Scheduled Tribes and other backward categories of persons as may be...." "may be" की जगह "shall be" हो जाए, तो एक नया विश्वास पैदा हो जाएगा, जिसकी आज देश को बहुत जरूरत है "as may be determined by the Central Government." इसमें may का जो उल्लेख किया गया है, मैं चाहूंगा कि उसकी जगह shall किया जाए। और यह कानून जब बनेगा, कैसे बनेगा यह तो बैकवर्ड, दलित या वनवासियों के लिए एक ऐसा प्रावधान है कि जैसे उसके लिए टैम्पटेशन दिया गया है। आगे आने वाले दिनों में उसका इम्पलिमेंटेशन हो या न हो, यह निश्चित नहीं लिखा गया है। मैं चाहूंगा कि इसी बिल में यह प्रावधान किया जाए, जिससे आने वाले दिनों में हमारे बैकवर्ड वर्ग या दलित वर्ग की जो युवा पीढ़ी है, उसे यह न लगे कि हमारे साथ अन्याय किया गया और हमें जो टैम्पटेशन दिया गया है, उसका कोई मतलब नहीं है। हम सभी को आगे लाने की कोशिश कर रहे हैं और सभी वर्गों में जो युवा पीढ़ी के क्षमतावान लोग हैं, उनको जोड़ना चाहते हैं। मुझे लगता है कि इसमें ऐसा प्रावधान करना होगा। नेशनल इंस्ट्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नॉलोजी कारपोरेट बॉडी बनने जा रहा है। इसमें जो ताकत और क्षमता है, वह तभी काम में आएगी, जब युवा पीढ़ी की मदद की जाएगी। बिल में जो प्रावधान हैं, उसके मुताबिक उनका सच्ची निठा से इम्पलीमैंटेशन होना चाहिए। कानून

का इंटरप्रिटेशन अलग-अलग तरीके से होता है। कॉरपोरेट बॉडी अलग करता है, मंत्रालय अलग करता है, गवर्नमेंट अलग करती है। इससे वह सीधे अस्वीकार्य हो जाता है। पांच साल करने के बारे में या विभिन्न सैक्शन्स का जैसे मैंशन किया गया है, उसका क्लीयरकट इम्पलीमैंटेशन होना चाहिए और स्टूडैंट्स की इच्छा के खिलाफ इंटरप्रिटेशन न हो।

अभी हम केवल अपने देश का ख्याल करते हैं लेकिन दुनिया में जिस प्रकार इसकी डिमांड है, उसे भी देखना होगा। बिल के अलग-अलग सैक्शन्स में बहुत कुछ कहा गया है। मुझे याद है कि हमने इंटरनेशनल फेडरेशन बनाया था और दिल्ली उसका हैड क्वार्टर बना था। सभी ने स्वीकार किया था कि नेशनल इंस्ट्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नॉलोजी जो दिल्ली में है उसे इंटरनेशनल बॉडी बनाया जाएगा। इसका जितना उपयोग होना चाहिए जैसे एग्जीविशन होनी चाहिए, नए कोर्सिज होने चाहिए, एक्सचेंज की एक्टिविटीज होनी चाहिए, वह नहीं होती हैं। भारत को यह सब करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था लेकिन कोई कार्रवाई न होने से हम आगे नहीं बढ़ सके। आज हम पूरे वर्ल्ड को फैशन डिजाइन का नया रास्ता दिखा सकते हैं क्योंकि हमारे बहुत क्षमतावान लोग हैं। इससे न केवल एक्सपोर्ट बढ़ेगा और युवा पीढ़ी की इच्छा पूर्ति होगी, उसके साथ-साथ पूरे वर्ल्ड में हमारे देश का नाम होगा। यह इंस्ट्टीट्यूट ऐसा बने जिस का नाम सम्मान के साथ लिया जा सके। इसके लिए जो भी कार्रवाई करनी हो, वह सरकार और हमें करनी चाहिए। इसके आधार पर हम आगे बढ़े।

निफ्ट के जो स्टूडैंट्स विदेश जाते हैं, हमें ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि वे वहां जाएं क्योंकि इससे मिलने और दूसरी कई चीजों का आदान-प्रदान होता है। इससे स्टूडैंट्स की क्रिएटिविटी बढ़ती है ।

19.00 hrs.

आज दुनिया में क्या हो रहा है, क्या डिमांड है, क्या मांग है? इसके बारे में जिस तरह से अलग-अलग डेलीगेशन जाते हैं उसी तरह से हमारे स्टूडेंट्स दुनिया के देशों में जाएं और फैशन और डिजाइन के क्षेत्र में अच्छे-अच्छे लोगों से मिलें, इससे मुझे लगता है कि इससे दुनिया के जिन अच्छे-अच्छे डिजाइनरों का नाम लेते हैं जैसे हमारे यहां रोहित बल और रितु बेरी का नाम लेते हैं, ऐसे अनेक हमारे यहां फैशन के क्षेत्र में डिजाइनर हैं, इससे हमारे देश के फैशन डिजाइनरों को और प्रोत्साहन मिलेगा जिससे हम इस दिशा में और भी आगे बढ़ सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि माननीय मंत्री जी इस सुझाव के बारे में जरूर चिंता करेंगे। यहां एक अच्छा एक्ट बना जिससे अच्छा इंस्टीट्यूशन कॉरपोरेट बॉडी बना, जहां की डिग्री से नया विश्वास पैदा हो रहा है। मुझे लगता है कि आज का एक फिक्स जगह का कैम्पस है जो सारे देश में फैले और सारे देश की युवा पीढ़ी इसमें सम्मिलित हो। इस बिल में जो प्रावधान किया गया है, इस प्रावधान का लाभ इस देश को मिलेगा, टैक्सटाइल इंडस्ट्री को मिलेगा, इस देश के ट्रेड और बिजनेस को मिलेगा, और यह बढ़ेगा, ऐसा मुझे विश्वास है। आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

19.01 hrs. (Mr. Deputy Speaker in the Chair)

उपाध्यक्ष महोदय :माननीय सदस्य सहमत हों तो एक घंटा हाऊस का समय बढ़ा दिया जाए।

कुछ माननीय सदस्य : जी, हां।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, I would request Shrimati Tejaswini Seerameshji to speak.

SHRIMATI TEJASWINI SEERAMESH (KANAKAPURA): I am seeking your permission to speak from here.

उपाध्यक्ष महोदय : आप यहां से बोल सकती हैं।

SHRIMATI TEJASWINI SEERAMESH : Thank you, Deputy Speaker, Sir. I rise to support the NIFT Bill 2005.

Sir, in this august House, I would like to say that no country can separate its culture and tradition from its fashion and lifestyle. In my view, in British India, by wearing two pieces of Khadi clothes, Bapuji ignited the freedom struggle. Thus, Khadi became the symbol of patriotism. Till today, above the party lines, Khadi dominates as a fashion and style symbol with every politician. In independent India, Pt. Jawaharlal Nehruji became the fashion icon by wearing white coat with rose. Everybody likes it. Even today, it is known as 'Nehru Coat'. Shrimati Indiraji conquered the world by wearing her wonderful Indian saree. Shri Rajivji conquered millions of Indian youth by wearing a wonderful attire. Today, our Leader, Shrimati Soniaji is also conquering middle class women by wearing cotton saree.

Not only that, I would like to tell you that my brother, Shri Swain is inspiring by his Oriya *kurta and dhoti*. Our leader, Shri Munsiji is also dominating and he is looking very elegant in his Bengali *dhoti*. Of course, our Punjabi brothers, our Prime Minister and our Deputy Speaker are also looking very elegant in their Punjabi turbans. Shri Advaniji is, of course, known for his half coat. Today, Shri B. Mahtab is not wearing his dress code. But he is very elegant in his half coat and shirt. I have noticed Nandini Satpathyji's designed *kurtas* were attracting the Central Hall.

Sir, in the early Eighties, the Government of India as part of its strategy to build competitiveness of the industry, recognized the potential of Indian textiles, apparel and lifestyle goods in the international market. Design and quality were identified as the key drivers for value addition. To meet these challenges the need for trained professionals in this sector became very pronounced. The setting up of the National Institute of Fashion Technology (NIFT) in the year 1986 was a benchmark effort to stimulate the export potential of the industry and to meet the emerging global challenges. As this industry was emerging as a major foreign exchange earner, the Government decided to set up six new NIFT Centres in the year 1995-97 to harness the full potential of the export business. With the opening of economy and booming of domestic market, NIFT has been instrumental in bringing about a paradigm shift in the perception of fashion in India touching the lives of everyone. Multifarious lifestyle businesses have since come to be recognised as the Fashion Industry.

A talented pool of more than 5000 NIFT graduates have been instrumental in professionalising the industry in the areas of strategy, approach, technology upgradation, design intervention, management practices; a rich contribution duly acknowledged by the industry. NIFT has distinguished itself as an institute of professional education benchmarked against international standards and is recognized as a leading global Fashion School.

The curriculum evolved by NIFT encompasses both creativity and functionality and is contextual and integrative across design technology and management, making forays into specialized areas of textiles, knitwear, leather and accessories. NIFT has undertaken research in diverse areas of fashion technology and applications thereof, contributing significantly to the productivity and quality of Indian products. Over the years, NIFT has gone beyond its traditional role of an educational institute and proactively supported a number of Government initiatives for social and human resource development creating immense employment potential in the textiles, apparel and craft sector through backward and forward integration. NIFT has introduced the craft cluster initiative as an integral part of its curriculum to develop a business model for craftsmen and weavers through design intervention, production techniques and market linkages; thus evolving a new paradigm of rural development.

NIFT has worked on collaborative projects with trade and industry organizations. NIFT has been instrumental in providing technical support to the HRD institutions for training professionals at managerial, supervisory and shop floor levels serving the fashion industry. NIFT has played a catalytic role in the growth of fashion and lifestyle related industry and businesses integrating design-technology-management, craft-industry, national-global and classroom and hands on entrepreneurial experience in a holistic manner. Over the years, NIFT has built strategies for promotion of Indian handlooms and handicrafts in the global market through Government-Non-Government, and public-private partnerships. NIFT has showcased the Indian fashion industry at various international fora.

In my view, NIFT has also played an important role in professionalizing the Indian textile and fashion industry and enriching the human resources skills and capabilities. The textile industry today contributes about 14 per cent to the industrial production and 4 per cent to the GDP. The industry also contributes handsomely to the foreign exchange earnings. The textiles sector currently employs 82 million – 35 million to 47 million in textiles and allied sector respectively. Besides, India has around 400 handloom clusters and approximately 3000 handicraft clusters providing employment to 13 million people. On the domestic front, the fast growing economy has the potential to drive up the consumption level. Despite technology advances, the textiles sector is labour intensive, especially in the apparel segment, which also generates the greatest value addition.

Sir, at last, I would like to give some suggestions to the Minister. The statutory status would enable NIFT to:

- Make fashion technology education as an attractive career option for talented students and faculty.
- Enable NIFT to play a catalytic role in the growth of fashion and lifestyle related industry and business integrating design – technology – management, craft industry, national-global and classroom – hands on entrepreneurial experience in a holistic manner.
- Be responsive to the needs of the industry and crafts sector in a dynamic, ongoing, qualitative and timely manner through flexible and evolving pedagogy and approach.

At last, Sir, I am requesting the hon. Textiles Minister and I am also requesting every MP from every party to support me. I am requesting the Ministry and demanding the Ministry to appoint 3 MPs - 1 from Rajya Sabha and 2 from Lok Sabha to NIFT to take care of this fashion technology. After all, women are more fashion oriented. I do not deny even my brothers are more fashion oriented.

Fashion is nothing but our tradition, fashion is nothing but our nationalism and to reflect it in our own manner, to promote our goods and to promote our culture, we must strengthen the National Institute of Fashion Technology. With these words, I support this Bill and I would like to thank you for giving me this opportunity.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shti Tathagata Satpathy. Please speak briefly, only for 3-4 minutes.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I am probably the only one who will be opposing this Bill. मुझे अगर पन्द्रह मिनट बोलने के लिए दे देंगे तो बहुत अच्छा होगा।

उपाध्यक्ष महोदय :मेरे पास और भी बिजनैस है। दो बिल और हैं।

SHRI TATHAGATA SATPATHY : But somebody has to oppose and you have to hear the voice of the Opposition also.

First of all, why is this new Bill brought? This has been brought here to make NIFT as an institute. As of now, it is a society. Now, the Government is making it an institute, but they are not freeing it from the clutches of bureaucrats of the Ministry of Textiles. It will remain in the same hands as it was earlier. They, at their sweet will, will decide as to who will be the Director-General, who will be the Registrar etc. Everything will be decided by a group of officers. This is a creative unit. It should have been encouraged to become free, to create young people, young boys

and girls of this country who will not look for job and who will not be servants, but they will decide, on their own, as to who will design, who will create, not procreate – we have too many people in this country procreating – and will create new ideas and new designs. But we are scuttling that. We are going in the old fashion of being dictated by bureaucrats.

Sir, look at our neighbour Pakistan, a much smaller country with much less population, but they are a much bigger exporter of finished garments than us because their fashion institutes are funded by cotton companies. Here, in this Bill, if you see Chapter-II, you will find as to how the bureaucrats are manipulating this institute. This is a small example I am giving. This is to be noted. Clause 8 (2) of this Bill says:

> "No bequest, donation or transfer of any property shall be accepted by the Institute, which in the opinion of the Board involves conditions or obligations opposed to the spirit and object of this section."

So, a few officers will decide what is good for the large number of young boys and girls who will be fashion designers.

Sir, the history of the National Institute of Fashion Technology has a chequered career. As I said, it does not create servants, but it creates creative young people with flair. As of now, NIFT gives diploma, but once this Bill is passed, it will probably come up with degree and doctoral courses. But when a change is happening, why does not the Minister use his political will to free it from the clutches of bureaucrats? He is a man who is known to have fought many battles in his home State against very powerful forces, but in front of bureaucrats he bows down. Why does he not fight and make NIFT a deemed university that it deserves? It can be made a deemed university and it should be compelled to become a profit-making unit of this country. Let them take funding from private organisations. Till 1996, UNDP was funding NIFT. Till that time it had some semblance of progress and development. कुछ-कुछ रिसर्च होते थे, but since 1996 when UNDP stopped its funding, all their research and other kind of work had stopped. They do not even have an electronic library. Now, they are talking of creating a database to collect and maintain literature and materials available in the area of fashion technology so as to develop a modern information centre within the country. Today, there is nothing within the country. There is no boundary any more. This is the age of Internet. You have to decide that you will create a database of designers, of designs, but these have to be different from the rest of the world.

Now, India is in a unique position. We have our culture, our heritage, starting from Punjab right up to Tamil Nadu, from Gujarat, from where the hon. Minister hails, to Orissa and Assam. Everywhere, there is traditional craft, there is traditional design. Are we able to develop that? No, Sir, we are not able to develop that.

What are we doing? You will be surprised to know that till now when NIFT hires a teacher, they ask stupid questions in the interview, which relate to the knowledge of English, to the knowledge of Mathematics, to the knowledge of geography of that teacher. But they do not ask the teacher about his aesthetics or her aesthetics. They do not ask the teacher what creative work that person has done in the life time so that person can impart that knowledge to the students.

In my opinion, design is an art. One cannot learn it in four or six months. You have it inside or you do not have it. When you are a teacher if you have something and that is nurtured then you inculcate it.

Today, what we see is that a lot of old faculty from NIFT is migrating. They are going away. Why are they going away? We should try to find that out. I know this Bill will be passed today and everybody will say 'Ayes' and

you will also say the 'Ayes' have it, the 'Ayes' have it. But I want to put my protest on record. Why is the good faculty of NIFT moving away? It is primarily because they do not see any future in NIFT. They do not see that they have any creative potential available for them if they stick on in NIFT. What is the NIFT management doing? They are threatening those people who are going away. They are saying, if you leave us, you give us back your pay for the last two years or three years and compelling the faculty to come back to NIFT.

Sir, you please tell that if a person or teacher is forced to work, what kind of teaching he can give to the students. It will not be a teaching from the heart, it will be a perfunctory thing. This is a creative unit, but you are destroying it at the bud itself.

Sir, getting a degree is definitely a wonderful thing. But NIFT also needs to be associated with national and international universities or such institutes. I know of one person, a very young friend of mine, who was a student of Delhi NIFT, who went to the US after getting his diploma from Delhi NIFT. He got his admission in the Chicago Design Institute not on the strength of the diploma of NIFT, Delhi, but on the strength of his BA degree.

Sir, we have NIFT in Gandhinagar, Bangalore, Hyderabad, Chennai, Kolkata, Mumbai and Delhi. But they are adding more courses. They have made a three-year course into a four-year course. They are adding more students, but there is no expansion of infrastructure. They are not giving them the required machinery. These things have to be taken into consideration.

Lastly, I have three specific demands and basing on those demands, I oppose this Bill. First is, it must be made into a deemed university. Second is, make it free from bureaucratic control and put a technocrat who knows fashion designing as the head of NIFT. Third, but one of the most important part, is make it a self-reliant profit making unit of its own so that it does not become another Government owned institute, but it becomes a cauldron of talent which will evolve in this country, but will spread its wings all over the world.

SHRI SURAVARAM SUDHAKAR REDDY (NALGONDA): Sir, while I say that this idea of National Institute of Fashion Technology being made an institute, which can give the degrees is a good idea, I support the idea. I agree with some of the criticisms that Shri Tathagata Satapathy has made. This is to be undoubtedly democratised. This Institute is already catering to the needs of fashion technology. I had the opportunity to visit this Institute both at Delhi and Hyderabad and I found that they are doing a very good job. The students who are given diploma after completion of the course should now be given a degree in lieu of a diploma so that it will be advantageous for their future careers. Already, many of these students are employed either in India or outside but a degree will certainly help them.

I would like to submit that this Bill has gone through the Committee on Labour and Textiles. I am sorry to say that many of the recommendations of the Standing Committee have not been accepted by the Ministry. I am really surprised to find that there are no representatives of the Members of Parliament. It is not that the MPs should be there because of some personal interest; they
should be there because the Standing Committee unanimously felt that the representatives of the Parliament would have a voice to democratise it and see to it that only the bureaucrats will not run the entire Institute. Almost everybody is nominated whether it is the Senate or the Board of Governors. Of course, it is said that Rashtrapati*ji* will be the Visitor, but it will be the bureaucrats of the Textiles Ministry who will nominate everybody. An Institute which is almost like a deemed university cannot run only by nominated persons. I think the teaching staff also should have a

representation in the Senate and at the same time there are certain other important things which should be taken into consideration.

There are only five centres where this institution is there. The Standing Committee has recommended that there is a necessity to establish the centres in tribal areas like Jharkhand and Chhattisgarh and more centres in north India. Most of the Centres are in Bangalore, Chennai, Hyderabad, Kolkata and Mumbai.

One more important thing which I would like to submit is this. The fee of the institute is very high. It is so high that poor and middle class students cannot afford it to be able to get admission. There is necessity to reduce it. When it is becoming an Institute with the degree, there should be a possibility. It is not only the question of reservation, it is the question of affordability of ordinary students. More than 30 per cent population of our country is living below poverty line and they cannot afford to get admission in these types of institutes. This should not become an Institute for elite and rich people only. These changes should be taken into consideration by the Minister and I think there should be representation of Members of Parliament, as recommended by the Standing Committee, two Members from Lok Sabha and one from Rajya Sabha, should be included in it.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now I would request the hon. Minister to reply to the debate.
*m06

श्री शंकर सिंह वाघेला : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं, माननीय काशीराम राणा जी, श्रीमती तेजस्विनी शीरमेश एवं अपोज करने के बाद भी श्री तथागत सत्पथी का आभारी हूं जिन्होंने इस पर अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए हैं। जिन माननीय सदस्यों ने इस बिल पर हुई बहस में भाग लिया, उन्होंने बहुत ही अच्छे ढंग से निफ्ट के बिल का वैलकम किया है। उधर से फर्माया गया कि यह बिल तो एन.डी.ए. के समय में ही तैयार हो गया था। उस समय यदि यह बिल सदन में पास होने के लिए आता, तो हम वहां होते और आपको सपोर्ट ही करते।

महोदय, यह इतना अच्छा इंस्टीट्यूट है कि इससे अब तक 5000 से ज्यादा स्टूडेंट्स डिप्लोमा ले चुके हैं और जिसकी जहां इच्छा थी, वहां एम्पलॉयमेंट मिला, यानी 100 प्रतिशत एम्पलायमेंट मिला। यह बहुत बड़ी बात है। हमारा एक्सपोर्ट अमरीका के लिए 26 प्रतिशत तथा ई.यू. को 18 प्र ातिशत बढ़ा है। इन बच्चों का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। मेरा इस ओर ध्यान तब गया, जब मैं मंत्री नहीं था। निफ्ट के बच्चे मेरे पास आए और उन्होंने मुझे बताया कि हमें डिप्लोमा देते हैं, डिग्री नहीं ।सत्पथी जी ने फरमाया कि उनके परिचित अमरीका गए थे, वहां के लिए डिग्री बहुत जरूरी है, चाहे आपको एडमिशन लेना हो या वीजा लेना हो। मैं समझता हूं कि एक डिग्री की कमी थी, जिसकी पूर्ति इसमें हो रही है।

महोदय, जब भी मैं निफ्ट के फंक्शन में जाता हूं, तो वे कहते हैं कि साहब आप जल्दी बिल लाइए। मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस बिल को रखने की अनुमति दी और सदन ने इस पर चर्चा की। इसमें नौकरशाही की बात उठी है। नौकरशाही का कंट्रोल होने के बावजूद आज निफ्ट का नाम बहुत अच्छा है। इसके बोर्ड में भारत के राट्रपति होंगे तथा एक सदस्य राज्य सभा से एवं दो सदस्य लोक सभा से बोर्ड आफ डायरेक्टर्स में रहेंगे। इन सदस्यों के बोर्ड में रहने से उसकी हाउस के प्रति पूरी जिम्मेदारी रहेगी, यह बहुत बड़ी बात है। मैं सभी पार्टियों से निवेदन करना चाहूंगा कि यदि वे महिला एमपीज को इसमें सदस्य के तौर पर नामांकित करेंगे, तो अच्छा रहेगा। यह बिल पास होने के बाद एक नई दुनिया बनेगी।

दूसरी बात, निफ्ट के नए सैंटर्स खोलने के बारे में कही गई है। मैं बताना चाहता हूं कि इसके लिए 25 करोड़ रुपयों का बजट होता है और कोई भी राज्य यदि हमें ऐसी सुविधा देता है, जो हमें चाहिए तो हमें नए सैंटर खोलने में कोई आपत्ति नहीं है। पहले महिला होस्टलों की कमी थी, लेकिन अब उस कमी को दूर करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। कई जगहों पर नए होस्टलों का निर्माण किया जा रहा है। मुम्बई में भी हम एक नया होस्टल बना रहे हैं। उसके अलावा हम किराये पर लेकर भी होस्टल खोलते हैं। इसलिए छात्राओं के बारे में हम पूर्ण चिंता करते हैं। यह सही बात है कि बड़े शहरों में सैंटर होने से वहां के छात्र और छात्राओं को लाभ मिलता है, क्योंकि वहां इंडस्ट्रीज एवं फैक्टरीज ज्यादा होती है, जिससे उनको प्लेसमेंट मिल जाता है। मैं सदन को बताना चाहता हूं कि यदि ट्राइबल एरिया और उत्तर पूर्व राज्यों से प्रोपोजल आएंगे, तो हम उन्हें कंसीडर करेंगे।

आरक्षण की बात भी आयी है। मैं बताना चाहता हूं कि एक लाख रूपये से कम यदि किसी की इन्कम है तो हम उनको सुविधा देते हैं और दो लाख रुपए तक यदि इनकम है, तो हम अलग से सुविधा देते हैं। इसमें हैण्डिकैप्ड के लिए भी आरक्षण की सुविधा है। ओबीसी का आरक्षण अभी मई वाला

ही रहेगा। यदि बाद में कुछ बदलाव होता है, तो वह बाद में देखेंगे। इसमें एनआरआई का भी कोटा है।

यह बात भी आयी कि इसे डीम्ड यूनिवर्सिटी क्यों नहीं बनाया गया, पूर्ण यूनिवर्सिटी क्यों बनाया है? मैं बताना चाहता हूं कि यूनिवर्सिटी बनने से इसका कंट्रोल यूजीसी के पास चला जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय : क्या इसमें एससीएसटी के लिए आरक्षण की सुविधा है?

श्री शंकर सिंह वाघेला : जी हां, उपाध्यक्ष महोदय, इसमें एससीएसटी और ओबीसी के लिए आरक्षण की सुविधा है।

मैं बताना चाहता हू कि डिम्ड यूनिवर्सिटी फ्लैक्सीबल नहीं होती है। यदि हमें फैशन टैक्नोलोजी के साथ कदम से कदम मिलाना है, तो इसे यूनिवर्सिटी का स्टेटस देना होगा ताकि इसमें फ्लैक्सीबिलटी रहे। चूंकि फैशन इंडस्ट्री पूरी दुनिया में फैली हुई है और हम चाहते हैं कि हमारी फैशन टैक्नोलोजी भी बाहर के देशों में जाए, जिस तरह से एम्स और आईआईटी का नाम है, उसी तरह से निफ्ट का भी नाम होना चाहिए, इसीलिए हमने यह बिल पेश किया है। स्थायी समिति द्वारा की गयी सिफारिशों को हमने इसमें शामिल करने की कोशिश की है। देहाती इलाकों में लगभग दस हजार लोग गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं और हमारे निफ्ट के छात्र उन दूरदराज के इलाकों में जाते हैं। उस क्लस्टर स्कीम के नीचे 8-10 हजार लोग लाभान्वित हैं। जो राज्य इसके डिजाइन में, प्रशिक्षण में, प्रोद्यौगिकी उन्न्यन में हस्तक्षेप करते हैं, इनको मार्केटिंग की सुविधा देते हैं, बाकी मार्केट लिंकेज की भी व्यवस्था करते हैं, इनमें कर्नाटक है, मध्य प्रदेश है, गुजरात है, केरल है और पश्चिम बंगाल है। आपके राज्य में, आपकी कांस्टीट्यूएंसी में भी अगर आपको लगता है कि निफ्ट के स्टूडेंट्स यहां आने चाहिए, हमारे यहां बहुत अच्छे क्लस्टर डैवलप हो सकते हैं तो हम जरूर आपकी कांस्टीट्यूएंसी, आपके जिले या आपके प्रदेश में भी इसके बारे में चिन्ता करके स्टूडेंट्स को भेजने की व्यवस्था करेंगे।

मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, जो पूरे पाइंट्स सब के थे, उनका उत्तर मैने देने की कोशिश की है। समय की भी कमी है...(व्यवधान)

श्री काशीराम राणा : जो सर्टिफिकेट कोर्सेज़ चलते हैं, उनके बारे में क्या है?

श्री शंकर सिंह वाघेला : सर्टिफिकेट कोर्सेज़ बढ़ाने की हम जरूर कोशिश करेंगे। अगर सैण्टर्स ज्यादा बढ़ेंगे तो शायद इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। अगर इतनी डिमांड है कि आपका सर्टिफिकेट कोर्स से भी मामला चलता है तो वह भी हम बढ़ाने की चिन्ता इसमें जरूर करेंगे, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को अगर लोकल वहां सर्टिफिकेट कोर्स के साथ एम्पलॉयमेंट मिलता है तो हम सर्टिफिकेट कोर्स की भी व्यवस्था करेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं सब का आभार व्यक्त करता हूं, आपका भी आभारी हूं, आप बिल पास करें, इसके लिए मैं आपसे निवेदन करता हूं।

SHRI SURAVARAM SUDHAKAR REDDY : There is no provision for the representation of Members of Parliament in this Bill.

श्री शंकर सिंह वाघेला : है। दो लोक सभा और एक राज्य सभा के हैं। यह स्टेंडिंग कमेटी की ही रिकमेण्डेशन थी।...(व्यवधान) वे निफ्ट के स्टूडेंट्स के फादर हैं।...(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

> "That the Bill to establish and incorporate the National Institute of Fashion Technology for the promotion and development of education and research in fashion technology and for matters connected therewith and incidental thereto, as passed by Rajya Sabha, be taken into consideration. "

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House shall now take up clause-by-clause consideration of the Bill.

The question is:

"That clauses 2 to 34 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clauses 2 to 34 were added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Long Title were added to the Bill.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The Minister may now move that the Bill be passed.

SHRI SHANKARSINH VAGHELA: I beg to move:

"That the Bill be passed."

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.